अपनाना ही मनुष्य का सर्वोच्च कर्तव्य है। उनके सभी आन्दोलनों और विचारों की आधारशिला सत्य रही।

→ 2. अहिंसा (Non-violence) :-

गाँधी जी के अनुसार अहिंसा केवल हिंसा का अभाव नहीं बल्कि मन, वचन और कर्म से किसी को भी कष्ट न पहुँचाना है। उन्होंने कहा- "अहिंसा का आरंभ और अंत आत्मानुशासन से होता है।" अहिंसा का पालन मानसिक, शारीरिक, भावात्मक और विचारों में भी होना चाहिए।

→ 3. सत्याग्रह (Satyagraha) :-

सत्याग्रह का अर्थ है "सत्य के प्रति आग्रह। उनके अनुसार अन्याय और अत्याचार का विरोध हिंसा से नहीं बल्कि सत्य, प्रेम और नैतिक बल से करना चाहिए। सत्याग्रह अन्यायपूर्ण सत्ता के विरुद्ध नैतिक हथियार है।

→ 4. ट्रस्टीशिप का सिद्धांत (Doctrine of Trusteeship) :-

गाँधी जी का मानना था कि समाज के सम्पन्न वर्ग को अपने धन और संसाधनों का उपयोग समाज के हित में करना चाहिए। वे मानते थे कि संपत्ति व्यक्तिगत अधिकार नहीं बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व है। इस सिद्धांत का उद्देश्य आर्थिक असमानता को समाप्त कर एक न्यायसंगत समाज की स्थापना करना है।

→ 5. सर्वोदय (Welfare for All) :-

गाँधी जी ने "सर्वोदय" यानि सबका कल्याण का विचार दिया। वे समाज के अंतिम व्यक्ति (Antyodaya) तक विकास और न्याय पहुँचाने के पक्षधर थे।

→ निष्कर्ष (Conclusion) :

गाँधी जी के सिद्धांत आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने स्वतंत्रता संग्राम के समय थे। उनके सिद्धांत न केवल सामाजिक परिवर्तन के साधन हैं बल्कि मानव सभ्यता के नैतिक आधार भी हैं।

— by —

Dr. Sangeeta Prakash

Scanned with CamScanner